:: अध्याय - पाँचवाँ ::

उ प सं हा र

:: उपसंहार ::

"भगवतीचरण वर्मा की कहानियों में प्रतिबिंबित समाज-जीवन का अनुशीलन" इस लघु शोध-प्रबंध का संक्षिप्त लेखा-जोखा तथा इसमें प्राप्त उपलब्धियों का जिक्र इसमें किया गया है।

पहले अध्याय में भगवतीचरण वर्माजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अंतर्गत साहित्यकार के नाते उनकी महानता का परिचय देते हुए उनका जीवन वृत्त लिखते समय जन्म, माता-पिता, बचपन, शिक्षा, शादी, जीविकोपार्जन के लिए उन्हें किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा उनकी मृत्यु किसप्रकार और कब हुई आदि के बारे में समग्र विवेचन किया गया है।

उनके व्यक्तित्व का वर्णन करते समय उनका रंगरूप, पोशाक, स्वभाव, निवृत्तिवादी दृष्टिकोण आदि बातों को स्पष्ट करते हुए उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को दिखाया है।

कृतित्व में साहित्य सृजन का आरम्भ और उनकी विभिन्न साहित्यिक विधाओं की चर्चा की है।

उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने के बाद निष्कर्ष रूपमें निम्नलिखित उपलब्धियाँ दिखाई देती हैं।

उनका बचपन बहुतही अभावग्रस्त स्थिति में बीता। छोटी उम्र में ही उन्हें घर की जिम्मेदारियों का बोझ ढोना पड़ा। आर्थिक समस्याएँ और अन्य अनेक पारिवारिक समस्याओं का सामना हिम्मत के साथ करते हुए वे अपने कर्तव्य-पथ पर आगे बढ़ते रहे और ऊँची शिक्षा भी प्राप्त कर ली। परिवार को सँभालने के लिए उन्हें अपनी इच्छा के विरुद्ध छोटी-मोटी नौकरियाँ करनी पड़ी। स्वाभिमान उनके स्वभाव में कूट-कूटकर भरा हुआ था। इसी स्वाभिमान के कारण वे एक स्थानपर अधिक दिनोंतक नौकरी नहीं कर सके। झूठ से उन्हें सख्त नफरत थी जिसके कारण वे वकील की हैसीयत से नाकामयाब रहे। उनकी नौकरियों के अधिकतर

क्षेत्र साहित्यसे संबंधित दिखाई देते हैं। कवि-प्रतिभा उनमें बचपन से ही थी। अत: वे बचपन से ही कविता लिखा करते थे। बाद में गद्य लेख, कहानी, उपन्यास ,नाटक निबंध आदि साहित्यिक विधाओं में उन्होंने साहित्य-सृजन किया और कामयाबी भी हासिल की। नौकरी में व्यस्त रहने के बावजूद भी वे साहित्य-सृजन करते रहे। अपने जीवन के अन्तिम बीस साल उन्होंने सिर्फ साहित्य-साधना में बिताकर अनेक मौलिक कृतियों को जन्म दिया। साहित्य के क्षेत्र में उपन्यासकार के नाते उनका स्थान अग्रणी है तो हिन्दी साहित्य जगत में उनका स्थान महत्वपूर्ण और चिरस्थायी है। इसी कारण भारत सरकार ने उन्हें "पद्मभूषण" किताब देकर उनका गौरव किया तथा उन्हें राज्यसभा की मानद सदस्यता दी गई। अन्त में उनके बारे में हम इतना कह सकते हैं कि, उनका जीवन सामर्थ्य और यश का मानो दीपस्तंभ है।

दूसरे अध्याय में वर्माजी की कहानियों का संक्षिप्त परिचय देते हुए इन कहानियों को आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और मनोरंजनात्मक वर्गों में विभाजित किया है। उनकी कहानियों में निम्नलिखित विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

1) उनकी अधिकांश कहानियाँ व्यक्ति मन की उलझनों और आर्थिक समस्याओं पर आधारीत है।

2) कुछ कहानियाँ दार्शनिकता पर भी आधारित हैं।

3) प्रारंभिक कुछ कहानियों में शिथिलता दिखाई देती है।

4) कहानी कला की दृष्टि से देखा जाय तो उनकी कहानियों में उत्तरोत्तर निखार आता गया है।

5) कहानियों के अधिकांश पात्र उच्च,मध्य और निम्नवर्ग के प्रतिनिधी के रूप में सामने आ गये हैं।

6) पात्रों का चरित्र-चित्रण घटना द्वारा, कथोपकथन द्वारा या आत्म-विश्लेषण द्वारा किया गया है।

7) कथोपकथन की दृष्टि से देखा जाय तो प्रारंभिक कहानियों की अपेक्षा बाद में लिखी गई कहानियों में कथोपकथन अधिक दिखाई देते हैं। कथोपकथन छोटे और रोचक हैं जो कथावस्तु को आगे बढ़ाने मे सहायक दृष्टिगोचर होते हैं।

8) कहानियों की भाषा भावानुकूल, पात्रानुरूप, सीधी और तरल होने के कारण स्वाभाविक लगती है।

9) उनकी कहानियाँ सोद्देश्य तो हैं ही साथ ही साथ विचारोत्तेजक भी लगती हैं।

॥10॥ हास्य और व्यंग्य उनकी कहानियों की प्रधान विशेषता है।

॥11॥ उनकी अधिकांश कहानियों के शीर्षक घटना और पात्र के नामपर दिये गये हैं जो आकर्षक और मनोरंजक लगते हैं।

तीसरे अध्याय में वर्माजी की कहानियों में प्रतिबिंबित समाज-जीवन के अन्तर्गत प्रथम उच्च-वर्ग, मध्य-वर्ग, और निम्नवर्गीय लोगों का विवेचन किया है।

मध्य वर्ग का चित्रण करते समय उनका अभावग्रस्त जीवन, झूठी शान, नाम और प्रतिष्ठा प्राप्त करने की लालसा, अमीर बनने की धुन आदि बातों को दिखाया है।

उच्च वर्ग में उच्चवर्गीय लोगों की स्वार्थी, निर्दयी, अय्याशी वृत्ति और झूठा अहंकार आदि बातों को स्पष्ट किया है।

निम्न वर्ग का चित्रण करते समय उनकी आर्थिक कठिनाइयाँ, पूंजीपतियों व्दारा उनपर होनेवाले अत्याचार ऊँची अभिलाषाएँ और उनका नैतिक पतन आदि का विवेचन किया गया है।

वर्ग-संघर्ष के अन्तर्गत मालिक-मजदूर संघर्ष, उच्च वर्ग, निम्नवर्ग का संघर्ष, अफसर-नौकर संघर्ष, इमानदार-बेईमान लोगोंका संघर्ष और स्त्री-पुरुष संघर्ष को स्पष्ट किया है।

नारी चित्रण के अन्तर्गत "आदर्श भारतीय नारी, पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित उच्छृंखल नारी, शिक्षित और साहसी नारी आदि नारी के विभिन्नरूपों का विवेचन किया है।

इसके अतिरिक्त उनकी कहानियों में चित्रित रूढ़ी-परंपरा, जाति-व्यवस्था धर्म, अंधश्रध्दा, बुजुर्ग-नौजवानों की आदतें, उपहार देने की प्रथा, सास-बहू का प्राचीन रूप - - - आदि अन्य सामाजिक बातों का भी जिक्र किया है।

अन्त में वर्तमान युग में रुपयों का बढ़ता महत्त्व और बदलते नीतिमूल्यों कोस्पष्ट किया है।

उपर्युक्त सभी बातों का अध्ययन करनेपर [illegible] निष्कर्ष रूप में निम्नलिखित बातें सामने आती है।

वर्माजी ने अपनी कहानियों में मुख्यतः शहरी समाज-जीवन का वास्तविक

चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इसमें उच्चवर्गीय लोगों की स्वार्थी, निर्दयी और अहंभावी वृत्ति को चित्रित करते हुए यह दिखाने का प्रयास किया है, कि, उच्चवर्गीय लोग निम्नवर्गीय लोगोंपर किसप्रकार अत्याचार करते हैं। और उनके अस्तित्व को मिटा देते हैं। ये लोग अपनी कमजोर होती जा रही आर्थिक स्थिति से समझौता करने का प्रयत्न नहीं करते इसी कारण कभी-कभी अपने जीवन में नाकामयाब हो जाते हैं।

मध्यवर्ग का अध्ययन करनेपर यह दिखाई देता है कि, पूंजीपतियों के शिकंजे में फँसे हुए मध्यम-वर्गीय लोगों को अमीरों के एहसानोंपर जीना पड़ता है। शिक्षित होते हुए भी बेकारी की भयानकता का सामना करना पड़ता है। मध्यम वर्गीय नवयुवकों में दिखाई देनेवाली झूठी शान, बड़प्पन की भावना तथा अमीर बनने की धुन आदि बातों के कारण उनका पतन होता है।

निम्न वर्ग के अध्ययन से यह दिखाई देता है कि, पहले से ही आर्थिक विपन्नता में जीनेवाले इन लोगों का जीना पूंजीपतियों के अत्याचारों के कारण और भी दूभर हो जाता है। कभी-कभी उँची अभिलाषाओं के कारण उनका नैतिक पतन होता दिखाई देता है।

वर्ग संघर्ष के अंतर्गत अधिकतर वर्गसंघर्षों के मूल में आर्थिक सम्पन्नता और विपन्नता दिखाई देती है।

स्वातंत्र्यपूर्व काल में नारी अशिक्षित थी, तब वह परम्परागत रूढ़ी-परम्पराओं को मानकर अपने कर्तव्यों का पालन करती थी। पति को देवता मानती थी। बाद में शिक्षा प्रसार के कारण शिक्षित बनी नारी में काफी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। वह अपने अधिकारों के प्रति जागृत होकर अपनी भलाई-बुराई खुद समझने लगी है और कुछ साहसी भी बन गई है।

उनकी कहानियों में स्थित नारी चित्रण का अध्ययन करनेपर ~~ऊपर~~ उपर्युक्त बातें सामने आती हैं।

उनकी कहानियों में चित्रित, धर्म, अंधश्रध्दा, रूढ़ी-परम्परा के चित्रण से दिखाई देता है कि, अशिक्षा के कारण समाज में अंध-श्रध्दा फैल गयी है और उनका लाभ पण्डित-पुरोहित जैसे पाखण्डी लोग उठाते हैं। रूढ़ी-परम्परा का आडम्बरयुक्त रूप स्पष्ट करने का प्रयास दृष्टिगोचर होता है।

वर्तमान युग में रुपये का बढ़ता महत्व और आधुनिक सभ्यता के कारण

बदलते नीतिमूल्यों के चित्रण से स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान समाज में चाटुकारिता, मक्कारी, असभ्यता, अमानविषता आदि बातें फैल रही हैं जिसके कारण समाज का नैतिक पतन हो रहा है।

चौथे अध्याय में वर्माजी की कहानियों में प्रतिबिंबित समस्याओं का विवेचन किया है। इसमें प्रथम तत्कालिन सामाजिक परिस्थिती का परिचय दिया है और बाद में नारी समस्या, आर्थिक समस्या, धार्मिक समस्या, राजनीतिक समस्या और स्वतंत्रता प्राप्ति की समस्या का विवेचन किया है।

नारी समस्या में वेश्या समस्या, विधवा समस्या, अनमेल विवाह समस्या नारी धनलिप्सा, आदि का चित्रण किया है।

आर्थिक समस्या के अन्तर्गत नौकरी के क्षेत्र में व्याप्त विभिन्न समस्याएँ तथा धन के बलपर निर्मित झूठ, फरेब, भ्रष्टाचार, अर्थलिप्सा आदि समस्याओं को स्पष्ट किया गया है।

धार्मिक समस्या में अंधविश्वास, पंडितों की लोभी औरपाखण्डी वृत्ति और धार्मिक क्षेत्र का बेसुरापन दिखाया है।

राजनीतिक समस्या के अन्तर्गत इस क्षेत्र में व्याप्त मक्कारी, चाटुकारिता, नेता लोगों की कुटिल और स्वार्थी वृत्ति आदि को स्पष्ट किया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति की समस्या में अंग्रेजों की क्रूर वृत्ति और भारतीय नौजवानों के उत्साह को दिखाया है।

इन समस्याओं का अध्ययनकरने के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले हैं।

।1। वर्माजीने अपनी कहानियों में विभिन्न सामाजिक समस्याओं को यथार्थ रूपमें चित्रित करने का प्रयास किया है।

।2। इन समस्याओं के चित्रण में उन्होंने अपनी तरफ से कोई स्पष्ट नसीहत नहीं दी है बल्कि उनका चित्रण इसप्रकार किया है कि, पाठक उनपर सोचेने के लिए उद्युक्त हो जाए और सही हल ढूँढ निकाले।

।3। वेश्या समस्या के चित्रण में वेश्या के चरित्र को ऊँचा उठाकर उनके प्रति लोगों के मन में जो दृष्टिकोण है उसमें परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि, आर्थिक मजबूरी ही औरतों को वेश्या बनाती है।

।4। अनमेल विवाह समस्या में उसकी अनुचितता, को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है तो विधवा समस्या में अल्पायुही में विधवा होनेवाली नारीयों की दुर्दशा का चित्रण किया है।

15। नारी की धनलिप्सा के कारण उसका जो नैतिक पतन होता है उससे परावृत्त करने का प्रयास किया है।

16। नौकरी के क्षेत्र में व्याप्त सिफारिश, चाटुकारिता, रिश्वतखोरी अपने अधिकारों का गैर कानूनी उपयोग जिसके कारण मध्यम-वर्गीय समाज की होनेवाली शोचनीय अवस्था को स्पष्ट किया है।

17। अन्य आर्थिक समस्याओं में धन के बलपर निर्मित फरेब, भ्रष्टाचार, आदि के चित्रण से यह स्पष्ट हो गया है कि इन समस्याओं के कारण गरीब अधिक गरीब और अमीर अधिक अमीर बनता जा रहा है। गरीब व्यक्ति अपनी आर्थिक निर्बलता के कारण अधिकारों से वंचित होने लगा है। समाज का नैतिक पतन हो रहा है।

18। धार्मिक समस्या के चित्रण से धर्मपण्डितों की लोभी और स्वार्थी वृत्ति तथा इस क्षेत्र में दिखाई देनेवाला बेहुरापन और अमंगल वातावरण स्पष्ट हुआ है।

19। राजनीतिक समस्याओं में नेता लोगों की झूठी और स्वार्थी वृत्ति स्पष्ट हो गई है।

110। स्वतंत्रतापूर्व लिखी गई कुछ कहानियों में अंग्रेजों की गुलामी के विरुध्द असंन्तोष फैलाकर उनके खिलाफ लड़ने के लिए भारतीय नौजवानों को प्रोत्साहित करने का प्रयत्न किया है।

111। इन विभिन्न समस्याओं का अध्ययन करने के पश्चात हमें यह मानना पड़ेगा कि, वर्माजी ने अपने सामाजिक दायित्व को निभाने का भरसक प्रयत्न किया है इसमें जरा भी शक नहीं है।

संक्षेप मे मैं इतना ही कहूँगी कि, वर्माजीने समाज-चित्रण में आर्थिक सत्ता को ही अधिक महत्त्व दिया है। अर्थलोलुप वृत्ति का दौर्य उनकी कहानियों में चित्रित हुआ है।